By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-8

Topic - Liberalism

Class - B.A. Degree - III (Hons., P-VIII D)

Subject - Political science

Date - 8 sept., 2020

By Rahul Kumar Jha.

उदारवाद :-

1 उदारवादी विचारधारा की प्रमुख विशेषताएँ :-

राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत का समर्थन - उदारवाद निरंकुशतावाद के किसी भी सिद्धांत का प्रबल विरोधी है। उदारवादियों ने प्रारंभ से ही साम्राज्यवाद का भी प्रबल विरोध किया है। उदारवाद की प्रमुख मान्यता यह है कि प्रत्येक देश का शासन उस देश के निवासियों की इच्छा से ही संचालित होना चाहिए। इससे ही व्यक्ति की स्वतंत्रता बनी रह सकती है।

अतः उदारवाद शब्दीय आत्म-निर्णय के अधिकार का पूर्णतः समर्थक है। यह स्वशासन के सिद्धांत का ही समर्थन करता है।

(10) व्यक्ति साध्य तथा राज्य साधन :- उदारवादी विचारधारा इस बात पर जोर देते हैं कि व्यक्ति अपने हितों का निर्णायक है। मनुष्य अपने जीवन के हर कार्य में प्राकृतिक रूप से स्वतंत्र है। इसी आधार पर यह एक साध्य है। राज्य तथा अन्य संस्थाएं उसके विकास का साधन है। आधुनिक उदारवादी विचारकों ने व्यक्ति और राज्य के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने की वकालत करते हैं।

(11) राज्य एक कृत्रिम संस्था है और उसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना है — उदारवादियों के अनुसार राज्य कोई ईश्वरीय व प्राकृतिक संस्था नहीं है यह एक कृत्रिम संस्था है जिसका निर्माण व्यक्तियों ने अपने हितों के लिए

एक संविदा के तहत किया है। हॉब्स, लॉक व रूसो का चिन्तन इसी मत का समर्थन करता है। बर्क, ग्रीन, कॉण्ट जैसे विचारक भी इसी मत को पुष्टि करते है।

बेंथम का मत है कि राज्य एक उपयोगितावादी संस्था है जिसका कार्य 'अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख' प्रदान करना है। इस तरह उपयोगितावादी विचारक राज्य का आधार समझौते को बजाय इसकी उपयोगिता को मानते हैं। इस वर्णन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चाहे राज्य का जन्म कैसे भी हुआ हो, वह एक कृत्रिम संस्था है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को अधिकतम स्वतंत्रता प्रदान करके उसके व्यक्तित्व का विकास करना ही है लेकिन आधुनिक उदारवादी व्यक्ति की बजाय सारे समाज के कल्याण को ही प्राथमिकता देते है।

CHAPTER CONTINUES...